Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2019

वाल्मीकि रामायण में पर्यावरणीय चेतना

डॉ. बलवंत सिंह चौहान [1]

[1] एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. भीमराव अबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि रचित 'रामायण' महाकाव्य विश्व का प्रथम महाकाव्य होने के साथ ही मानव को मार्ग दिखाने वाला एक महान् दिग्दर्शन भी है। वाल्मीकिकृत रामायण एक ऐसा लोकप्रिय काव्य है, जिसकी कथावस्तु जन-मानस में सदैव सञ्चरित होती रही है। **धीरोदात्त** क्षत्रिय मर्यादा **पुरुषोत्तम** श्रीराम ईश्वर के अवतार हैं, जिनका चरित्र निश्चय ही मंगलकारी है। यह महाकाव्य सनातन काव्य बीज होने के कारण परवर्ती काव्यों का उपजीव्य है। यही कारण है कि यह काव्य अनन्तकाल से लेकर आज तक सर्वकालिक रूप से प्रासंगिक बना हुआ है। करुणरस प्रधान 'रामायण' को आदर्श मानकर ही भामह, दण्डी, रुद्रट आदि ने उनमें घटित लक्षणों के आधार पर अपने अलंकार शास्त्रीय ग्रंथों की रचना में महाकाव्य आदि के लक्षण बतलाये हैं। इस महाकाव्य में जीवन के मूलभूत तत्त्वों का सांगोपांग वर्णन महर्षि वाल्मीकि ने किया है। यह ग्रंथ मनुष्य मात्र के समस्त गुणों, धर्मों एवं जीवनमूल्यों का यथार्थ निदर्शन करता है। इसमें मानव समाज के संगठन, सामाजिक, जीवन, आर्थिक व धार्मिक विचारणाएँ, संस्कृति, आचार-व्यवहार, राजनीति, शासन-प्रशासन आदि से स□बन्धित नीतियों का पूर्णतया चिन्तन प्रकट किया गया है।

KEYWORDS: घृतेन द्यावा, सस्यमालिनी, पिप्पलीवन, सुतीर्थम, कमलोत्पल, नासूयको।

विषय उपस्थापन -

वस्तुत: वाल्मीकि रामायण लोक-परलोक, भोग और मोक्ष, व्यवहार तथा आदर्श, प्रकृति व मानव के पारस्परिक घनिष्ठ **सम्बन्ध** को रेखांकित करती है। उक्त कृति हमें बताती है कि मनुष्यों के विचारों के अनुसार ही उसके आस-पास का वातावरण बनता है। मनुष्य द्वारा किये गये कर्म ही स्वर्ग और नरक की सृष्टि करते हैं। यही कारण है कि निज धर्म का अनुसरण करता हुआ मानव जब तक प्रकृति से **तारतम्य** स्थापित करके चलता रहा, तब तक उसके पास किसी भी तरह की पर्यावरणीय समस्याएं नहीं आई। परन्तु आज मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर भीषण पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या से जूझ रहा है। यह पर्यावरण मात्र प्रकृति तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह मनुष्य-मस्तिष्क से लेकर उसके भावों और कार्यों तक में सर्वत्र समाविष्ट है। मनुष्य के **सम्पूर्ण** क्रियाकलाप व भौतिक वस्तुएँ तथा समस्त विचारणाएँ जिसके द्वारा आच्छादित हैं, उन परिस्थितियों तथा वातावरण को पर्यावरण कह सकते हैं।

भारतीय मान्यता के अनुसार प्राकृतिक पर्यावरण के अतिरिकत मानसिक विचार, अध्यात्म, संस्कृति तथा समाज इत्यादि पर्यावरण के आवश्यक अंग है। वेदों से लेकर लौकिक साहित्य तक सर्वत्र ही प्रकृति पर्यावरण का साक्षात्कार हमें प्रत्यक्ष रूप से होता है परन्तु लिप्सावश मनुष्य ने प्रकृति के सौन्दर्य को नष्ट करने का भरसक प्रयास किया। इसके फलस्वरूप औद्योगिक विकास, परमाणु, परीक्षण, आधुनिकीकरण, **जनसंख्या** वृद्धि, वनों की अंधाधुंध कटाई, तीव्रगति से प्रसरित प्रदूषण, संसाधनों का निर्मम शोषण, वन्य-जीवों का विनाश प्रभृति कारणों से आज पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इन प्रदूषणों के निवारण के लिए पर्यावरण संरक्षण की महती आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल से ही पूर्वजों द्वारा पृथिवी-जल-वायु-वनस्पति आदि की देवताओं के रूप में सहस्रों वर्षों तक स्तुति करके **तत्सम्बन्ध** प्राकृतिक स्रोतों की सतत रक्षा की **परम्परा** चलायमान रही है।

ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधयो शान्ति:

सर्व शान्ति: शान्तिरेव शान्ति:। सा मा शान्तिरेधि।[1]

मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने **सम्यक्** रूप में कहा कि वन, वृक्ष, वनस्पति और लताएँ प्रदूषण को दूर करते हैं। वायु को शुद्ध करके सुगन्धित गन्ध को प्रवाहित करते हैं; ये मेघों की **उत्पत्ति** में सहायक होते हैं। इस प्रकार ये सभी पर्यावरण के संरक्षण में महान् उपकारक हैं।

ऋग्वेद में 'वनस्पतिं वन आस्थापयध्वम्'[2] में वृक्षारोपण का सन्देश यही कह रहा है।

वायु के समान जल का भी पर्यावरण संरक्षण में **महत्त्वपूर्ण** योगदान है। अत: जल की देवी व मातृ रूप में पूजा की गई है।

'शन्नो देवीरभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये।'[3]

ऋग्वेद में जल को अमृत और भेषज (औषधि) के रूप में स्वीकार किया गया है -

'अप्स्वन्तरमृतं अप्सु भेषजम्।'[4]

इसी प्रकार अथर्ववेद में पृथिवी को सभी प्राणियों की माता और समस्त जगत् में निवास करने वालों को उसका पुत्र कहा गया है ङ्क

यत् ते मध्यं पृथिवी यच्च **नभ्**यं, यास्त ऊर्जस्तन्व: स□बभुव:।

तासु नो धेहि अभि न: पवस्व माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:।।[5]

वहीं वेदों के अनुसार पर्यावरण शुद्धि का **सर्वोत्तम** सरल साधन अग्निहोत्र अर्थात् यज्ञ है। यज्ञ की अग्नि में डाली गई हव्य सामग्रियों, घृत और आहूतियों से पर्यावरण शुद्ध, सुगन्धित, प्राणदायक और स्वास्थ्यवर्द्धक बनता है। घृत अग्नि में **प्रयुक्त** होकर ह-जार गुणा शक्ति **युक्त** होकर पर्यावरण को प्रदूषण रहित बनाता है।

घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथाम।[6]

इस प्रकार यज्ञ के अवसर पर भक्तिभावपूर्ण मधुरवाणी में उच्चारित किये गये मंत्र निश्चय ही **सम्**पूर्ण वातावरण में शान्ति, सुख, सौहार्द एवं आनन्द का सञ्चार करते हैं। निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि यदि हमें प्राकृतिक समस्याओं का समाधान करना है तो प्राचीन वैदिक ऋषियों द्वारा निर्देशित मार्गों का अनुसरण करना ही होगा, तभी हमारा और प्रकृति का अस्तित्व बच सकता है।

आदिकाव्य रामायण में प्रकृति के साथ मनुष्य के **तादात्म्य** का निदर्शन महर्षि वाल्मीकि ने कराया है। हम देखते हैं कि रामायण में प्रकृति तथा मनुष्य का स□बन्ध परस्पर अन्योन्याश्रित है, जो कि शाश्वत **सम्बन्ध** है, **क्योंकि** मनुष्य के शरीर का निर्माण भी प्रकृति के **पञ्चतत्त्वों** के संयोग से ही हुआ है। मनुष्य जीवन के **सम्**पूर्ण क्रियाकलाप जन्म से मृत्युपर्यन्त प्रकृति से ही अभिन्न रूप से जुड़े हैं **क्योंकि** प्रकृति ने सदैव ही मनुष्य का मार्ग निर्देशन किया है। प्रकृति द्वारा शिक्षित **व्यक्ति** ही **सभ्**यता के विविध आयाम तय कर पाया है। मनुष्य का समस्त जीवन ही प्रकृति के मन-भवन प्रांगण में व्यतीत हुआ है और निरन्तर प्रकृति के सान्निध्य में रहने के कारण 'रामायण' काव्य का महर्षि वाल्मीकि पर पूर्ण प्रभाव पड़ा है। यही कारण है कि रामायण प्राकृतिक वर्णनों से **युक्त** है। कविवर ने रामायण के प्रमुख पात्रों के जीवन के अधिकांश समय को प्रकृति के प्रांगण वनों में निरूपित करके उनके व्यक्तित्व को उत्कर्ष प्रदान करने वाले क्रिया-कलापों का चित्रण किया है। कविवर प्रथम काण्ड (बालकाण्ड) में अयोध्यानगरी का मनोरम चित्रण करते हुए कहते हैं कि अयोध्यानगरी की शोभा विचित्र थी। समतल भूमि पर बसी अयोध्यानगरी घनी आबादी से **युक्त** थी। धान के चावलों से भरपूर उस नगरी का जल इतना मीठा था, मानो ईख का रस हो।

गृहगाढामविच्छिद्रां समभूमौ निवेशिताम्।

शालितण्डुलसम् पूर्णमिक्षुकाण्डरसोदकाम्।।[7]

महात्मा वसु से सम्बन्ध रखने वाली 'मागधी' नाम से प्रसिद्ध सोननदी के दोनों तटों पर सुन्दर हरी-भरी फसलों से युक्त क्षेत्र वहाँ के सौन्दर्य की अनवरत वृद्धि करते रहते थे।

सैषा हि मागधी नाम राम वसोस्तस्य महात्मनः।

पूर्वाभिचरिता राम सुक्षेत्रा सस्यमालिनी।।[8]

चित्रकूट के मार्ग में यमुनानदी के तट पर पहुँचकर श्रीराम रात्रि व्यतीत करते हैं। वे यमुना नदी का तट का सुरम्य वातावरण देखकर हतप्रभ हो उठते हैं क्योंकि यमुना का तट समतल व मोरों, हाथियों व वानरों से युक्त था तथा विविध वृक्ष अपनी मनोहरता सर्वत्र बिखेर रहे थे। मयूरों के झुण्ड अपनी मधुर ध्वनि से कलरव करते हुए उनका अभिवादन करते हैं -

विहृत्य ते बर्हिणपूगनादिते, शुभे वने वारणवानरायुते।

समं नदीवप्रमुपेत्य सत्वरं, निवासजग्मुरदीनदर्शना।।[9]

अरण्यकाण्ड के एकादश सर्ग में रघुनन्दन अगस्त्य मुनि के भाई के आश्रम की मनोहारिता देखकर प्रफुल्लित हो उठते हैं। पिप्पलिका के वन उस आश्रम की शोशा बढ़ाने वाले थे। फूलों और फलों से युक्त उस आश्रम में नाना प्रकार के पक्षियों के कलरव से गूँजते हुए उस रमणीय आश्रम के आस-पास भाँति-भाँति के सरोवर कमलमण्डित दिखाई देते हैं। स्वच्छ जल से भरे हुए सरोवर की शोभा चक्रवाक पक्षी बढ़ाते हैं -

स्थलीप्रायवनोद्देशे पिप्पलीवनशोभते।

बाहुपुष्पफले रये नानाविहगनादिते।।[10]

इसी प्रकार महाकवि वाल्मीकि ने अपनी कृति में मैनाकपर्वत, रजतपर्वत, पञ्चवटी, चित्रकूट, ऋष्यमूकपर्वत, महेन्द्रपर्वत, विन्ध्यपर्वत, त्रिकूटपर्वत, मलयपर्वत आदि का मनोहारी चित्रण किया है। इसी प्रकार तमसा, गंगा, यमुना, सरयू, मन्दाकिनी, गोदावरी, तुंगभुद्रा, नर्मदी, गोमती, विपाशा आदि नदियों के मनोरम चित्रण प्रस्तुत किये हैं। श्रीराम चित्रकूट पर्वत के समीप बहने वाली मन्दाकिनी नदी को देखकर अपने समस्त कष्टों को भूल जाते हैं तथा मंदाकिनी के जल को सम्पूर्ण जगत् के लिए सुखदायी बतलाते हैं -

सुरम्यमासाद्य तु चित्रकूटं, नदीं च तां माल्यवतीं सुतीर्थाम्।

ननन्द हृष्टो मृगपक्षिजुष्टां, जहौ च दुःखं पुरविप्रवासात्।।[11]

इसी प्रकार उपजीव्य काव्य 'रामायण' अनेकविध जलाशयों के मनोहारी चित्रणों से भरा पड़ा है। पम्पा सरोवर का चित्रण करते हुए कविवर कहते हैं कि पम्पा के जल में हंस, क्रौञ्च, कुरर आदि पक्षीगण मधुरस्वर में कुञ्जन करते रहते हैं। वहीं पम्पा के तट पुष्पराशियों से युक्त हैं तथा उसका जल कमलगन्ध से सुवासित, कल्याणकारी, सुखद, शीतल, रोगनाशक व रजत के समान स्वच्छ है। यह पम्पा सरोवर शीतलजल की निधि प्रतीत होती है। लाल कमलों से ताम्रवर्णी कुमुदपुष्पों से शुक्लवर्णी और नीलकमलों से नीलवर्णी दिखाई देने से रंगीनकालीन की भाँति सुशोभित होता है।

राम सञ्जातवालूकां कमलोत्पलशोभिताम्।

तत्र हंसाः प्लवाः क्रौञ्चाः कुरराश्चैव राघव।।[12]

पद्मसौगन्धिकैस्ताम्रां **शुक्लां** कुमुदमण्डलैः।

नीलां कुरलयोद्घाटैर्बहुवर्णां कुथामिव।।[13]

इसी प्रकार रामायण में मानस सरोवर, वैखानस सरोवर, सुदर्शन सरोवर, लंकास्थित सरोवर, पञ्चाप्सरतीर्थ आदि तीर्थों के मनोहारी चित्रण यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं।

कविवर वाल्मीकि ने अपनी कृति में उपवनों के वृक्षों, उनके सौन्दर्य व वैभवपूर्ण साजोसज्जा का चित्रण भी यत्र-तत्र किया है। बालकण्ड में अयोध्यापुरी की महिमा का वर्णन करते हुए कविवर लिखते हैं कि इस नगरी के चारों ओर उद्यान तथा आमवृक्ष के उद्यान थे। अयोध्यानगरी पुष्पवाटिकाओं और उद्यानों से सुशोभित थी। अयोध्या के पवित्र उद्यानों में सांयकाल लोग क्रीड़ा करते थे तथा उन उद्यानों की अपूर्व शोभा सर्वत्र बिखरी हुई थी। श्रीराम कहते हैं कि श्रेष्ठ वारांगनाओं से सुशोभित, रथों, घोड़ों और हाथियों के आवागमन से भरी हुई, विविध वाद्यों की ध्वनियों से निनादित, समस्त कल्याणकारी वस्तुओं से भरपूर हृष्ट-पुष्ट मनुष्यों से सेवित, पुष्पवाटिकाओं और उद्यानों से सुशोभित तथा सामाजिक उत्सवों से सुशोभित मेरे पिताश्री की राजधानी अयोध्यापुरी में जो लोग विचरण करेंगे, वस्तुतः वे सुखी ही हैं-

रथाश्वगज **सम्**बाधां तूर्यनादनिनादिताम्।

सर्वकल्याण **सम्**पूर्णां हृष्टपुष्टजनाकुलाम्।।

आरामोद्यान **सम्**पन्नां समाजोत्सवशालिनीम्।

सुखिता विचरिष्यन्ति राजधानीं पितुर्मम।।[14]

इसी प्रकार रामायण में देव उद्यान, मिथिला के उपवन, पम्पा के तटवर्ती उपवन, अशोक वाटिका, मधुवन, अशोक वनिका व लंका के उपवनों का मनोहारी चित्रण यत्र-तत्र द्रष्टव्य है।

वहीं सामाजिक पर्यावरण चेतना की दृष्टि से महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होती है। तत्कालीन समाज के चारों वर्ण अपने-अपने कर्तव्यों का भली-भाँति पालन किया करते थे। यही कारण है कि उस समय वर्णों ने जाति का विकृत रूप धारण नहीं किया। उस समय योग्यतानुसार उनके कार्य विभाग बँटे हुए थे। समाज में प्रत्येक वर्ग का यथायोग्य सम्मान होता था न कि उन्हें हीनता या तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था। उस समय में किसी समारोह या उत्सवादि के अवसरों पर चारों वर्णों के मनुष्य आमन्त्रित किये जाते थे -

सर्वे वर्णा पूजां प्राप्नुवन्ति सुसत्कृताः

न सावज्ञा प्रयोक्तव्या कामक्रोधवशादपि।।[15]

निमन्त्रयस्व नृपतीन् पृथिव्यां ये च धार्मिकाः।

ब्राह्मणान् क्षत्रियान् वैश्यान् शूद्रांश्चैव सहस्रशः।।[16]

इस प्रकार रामायण काल में सामाजिक पर्यावरण सन्तुलित तथा व्यवस्थित था। सभी मनुष्य सौहार्दपूर्ण ढंग से रहते हुए अपने-अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित थे। रामराज्य में सर्वत्र सुख-शांति का मूल भी यही सौहार्द था तथा रामायणकाल में वर्ण व्यवस्था का मूल उद्देश्य समाज को सुचारू रूप से संचालित करना था न कि जातिगत संकीर्णता फैलाना।

रामायणकालीन समाज में शिक्षा का अधिक महत्त्व था। अयोध्या के सभी नागरिक शिक्षित थे, वहाँ कोई भी ऐसा नहीं था जो अशिक्षित हो। वहाँ नास्तिक, असत्यवादी, अनेक शास्त्रों के ज्ञान से रहित, दूसरों के दोष ढूंढने वाला तथा साधनों व विद्या से हीन कोई भी मनुष्य नहीं था।

नास्तिको नानृती वापि न कश्चिदबहुश्रुतः।

नासूयको न चाशक्तो नाविद्वान् विद्यते क्वचित्।।[17]

वैदिक आश्रमों तथा अध्ययनशालाओं की अधिकता के कारण ही अयोध्यापुरी में कोई भी अशिक्षित या अल्पशिक्षित दृष्टिगोचर नहीं होता था। सभी मनुष्य विद्वान् तथा गुणवान् होने के साथ ही सभी कलाओं में परिपूर्ण थे। वस्तुतः रामायण मानवजीवन को अनुशासित व आदर्श बनाने का एक अचूक अस्त्र है।

वहीं रामायण में राष्ट्रीय पर्यावरण चेतना की दृष्टि से राजा की उत्पत्ति से लेकर उसके आचार-विचार, गुण-दोष, नीति-अनीति, साहस, वीरता, बुद्धिमत्ता, दिनचर्या, प्रजापालन तथा अनेकानेक कर्तव्यों पर विस्तृत विवेचन दृष्टव्य है, जो किसी भी राष्ट्र की उन्नति, सुख-समृद्धि, शान्ति, सद्भाव आदि के लिए अत्यावश्यक है। रामायणकालीन समाज में धर्म, अर्थ और काम का स□पादन करने वाले कर्मों का अनुष्ठान करते हुए व सत्यप्रतिज्ञ राजा उसी प्रकार अयोध्यापुरी का पालन करते थे जैसे इन्द्र अमरावती का।

तेन सत्याभिसंधेन त्रिवर्गमनुतिष्ठता।

पालिता सा पुरी श्रेष्ठा इन्द्रेणेवामरावती।।[18]

वस्तुतः रामायण ही एक ऐसा महाकाव्य है, जिसने भारतीय साहित्य को सर्वाधिक प्रभावित किया है। वास्तव में रामायण एक पूजनीय ग्रंथ ही है। उक्त वाल्मीकि रामायण में न केवल प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण का विविध रूप में वर्णन मिलता है, बल्कि मानसिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पर्यावरण पर अनेकविध

प्रसंग द्रष्टव्य हैं। वेदों की भाँति निःसंदेह इस महान् कृति में सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आदर्शमय जीवन की समग्रता और पर्यावरणीय चेतना आदि का पदे-पदे समावेश हुआ है।

आज यह चिन्तनीय विषय है कि हम भ्रष्टाचार के अंधकार के निमग्न होते जा रहे हैं। मात्र वृक्षारोपण करने व बाह्य प्रदूषण को रोकने की आवश्यकता नहीं है, अपितु रामायणकालीन समाज की मानसिकता, कर्म और विचारों के अनुकरण की महती आवश्यकता है। हम सब मिलकर रामराज्य की कल्पना को साकाररूप देकर भारत को पुनः विश्व के शीर्ष पर मुकुट की भाँति सुशोभित कर सकते हैं।

REFERENCES

1. यजुर्वेद-30.17
2. ऋग्वेद-10.101.11
3. यजुर्वेद-36.12
4. ऋग्वेद-1.30.19
5. अथर्ववेद-12.1.22
6. यजुर्वेद-5.28

महर्षि वाल्मीकिप्रणीत 'श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण' प्रथम खण्ड, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत् 2076 व महर्षि वाल्मीकिप्रणीत 'श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण' द्वितीय खण्ड, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत् 2077

7. बालकाण्ड-5.17
8. बालकाण्ड-32.10
9. अयोध्याकाण्ड-55.33
10. अरण्यकाण्ड-3.11.38
11. अयोध्याकाण्ड 56.35
12. अरण्यकाण्ड 73.12
13. अरण्यकाण्ड 75.20
14. अयोध्याकाण्ड 51.22.23
15. बालकाण्ड 13.14
16. बालकाण्ड 13.20
17. बालकाण्ड 6.14
18. बालकाण्ड 6.5